IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विभिन्न युगों में नारी की बदलती स्थिति : एक अध्ययन

डॉ0 कल्पना सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
एस.एस.वी.(पी.जी.) कॉलिज, हापुड़ (उ0प्र0)
शोधार्थी कु0 रानी, हिन्दी विभाग,
एस.एस.वी.(पी.जी.) कॉलिज, हापुड़ (उ0प्र0)

सारांश:– नारी की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। नारियों की स्थिति में परिवर्तन होता रहा है। इनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक बहुत उतार–चढ़ाव आते रहे है और उनके अधिकारों में तदनरूप परिवर्तन भी होते रहे है। भारतीय समाज में नारी जन्म से लेकर मृत्यु तक एक अहम भूमिका अदा करती है। प्राचीन काल में नारियों को अधिक सम्मान प्राप्त था। उन्हें f"क्षा ग्रहण करने का अधिकार था। परिवार तथा समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था। उनको सम्पत्ति में भी बराबर का अधिकार प्राप्त था, मध्यकाल में विदेf"ायों के आगमन से नारियों की स्थिति में जबरदस्त परिवर्तन देखने को मिला। अf"क्षा तथा रूढ़ियों ने इन्हें जकड़ लिया। और घर की चार दीवारी में कैद नारी एक अबला व सबला बनकर रह गई।

आधुनिक काल में नारियों ने संघर्श कर अपनी एक पहचान बनाई। इस काल में नारियों के मन में भो एक स्वतंत्र समाज की कल्पना ने जन्म ले लिया। बीसवीं सदी के प्रारम्भिक काल में नारी ने इन सड़ी गली मान्यताओं को परास्त किया और अपनी स्वतंत्रता की तला"ा करतो हुई दिखाई दी, पितृसत्तात्मक समाज ने नारी को उसके अधिकारों से वंचित किया है। उसके जीवन का उद्‌देश्य बस विवाह तक ही सीमित है। नारी को चयन का अधिकार भी नहीं दिया।

मुख्य शब्द : युगों, नारी स्थिति, अध्ययन, प्राचीन काल, मध्य काल, आधुनिक काल, पितृसत्तात्मक, संघर्श।

प्रस्तावना : वैदिक युग में नारी की स्थिति सुदृढ़ थीं। उन्हें परिवार तथा समाज दोनों जगह पर सम्मान प्राप्त था। उनको f"क्षा का अधिकारी भी प्राप्त था, सम्पत्ति में भी उनको बराबर का अधिकार मिलता था, वे सभा व समितियों में भी स्वतंत्रतापूर्वक भाग लेती थी। वेद सम्पूर्ण जाति पथ–प्रद"र्िन करने वाले ऐसे मुख्य ग्रंथ है जिनमें मानव के धर्म–पथ का प्रद"र्िन किया गया है जिनमें मानव के धर्म–पक्ष का प्रद"र्िन किया गया है। इस धर्म पंथ का मुख्य विशय है–उपासना, कर्म एवं ज्ञान। उपनयन संस्कार तथा f"क्षा प्राप्त करने का अधिकार भी नारियों को प्रूशों की भांति समान रूप से प्राप्त किया जाता था। तत्कालीन युग में नारियाँ सार्वजनिक स्थानों पर भाग लेती थीं। वैदिक काल में पुरूश नारियों को सम्मान की दृश्टि से देखता था, उनका बहुत आदर करता था।

"विश्व में ज्ञान– ज्योति का सर्वप्रथम प्रका"ा करने वाले आदिम सभ्य आर्य है, आया की प्राचीन सभ्यता में नारी का कितना सम्मान है यह सूक्ष्मता से खोजने जैसा गूढ़तत्व नहीं है। स्थान–स्थान पर हमें उसे परमै"वर्य पद पर प्रतिश्ठित पाते हैं। प्रस्तुत अध्याय में स्मृति पूर्व ग्रंथों–वेदों, उपनिशदों,

रामायण तथा महाभारत में नारी को स्थिति अधिकार एवं कर्त्तव्यों पर यत्विंचित् प्रका"ा डालने का प्रयास किया जा रहा है।''[1]

वैदिक काल में छुआछूत, पर्दा–प्रथा, सती प्रथा तथा बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं का प्रचलन नहीं था। विधवाओं के साथ सम्मान जनक व्यवहार किया जाता था। यहाँ पर पुत्र–पुत्री के पालन–पोशण में कोई भेदभाव नहीं किया जाता था। नारियों की भाादी निश्चित उम्र पर की जाती थी। उनको अपना जीवन साथी चुनने का पूर्ण अधिकार था। लेकिन विधवा पुर्न विवाह का प्रचलित न था पर विधवाओं को सम्मान दिया जाता था, और उन्हें अपने पति की धन–सम्पत्ति पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था।

''वैदिक काल में कन्या के विवाह में दहेज देने की प्रथा का स्पशट उल्लेख किया है, दहेज के अनुसार वधू का महत्व ससुराल में बढ़ जाता था। अर्थववेद में वधू के साथ सौ गायों को दहेज में दिए जाने का उल्लेख है। सूर्या का दहेज उसके ससुराल पहुँचने से पूर्व ही उसके पति के यहाँ पहुँचा दिया गया था।''[2] लेकिन फिर भी दहेज कन्याओं के विवाह में रूकावट पैदा करता था। यह वरपक्ष को आदर–सत्कार और प्रेमपूर्वक उपहार स्वरूप भेंट में दिया जाता था। वर पक्ष की तरफ स किसी भी प्रकार की माँग नहीं रहती थीं। कुछ ऐसी भी कन्याएँ थीं, जो कि आजीवन अविवाहित रहती थीं। ये अपने पिता के घर में वृद्धावस्था तक रहती थीं।

वैदिक काल में नारी को पुरूशों के समाज में f"ाक्षा, धार्मिक, राजनीतिक और सम्पत्ति के अधिकार तथा सम्पर्ण विशयों में समानाधिकार प्राप्त थे। इसके प"चात धीरे–धीरे नारी को प्रदत्त अधिकारों का हनन होता गया। नारी को प्रदान अधिकारों, स्वतंत्रता, f"ाक्षा, धार्मिक, अनुश्ठानों आदि से वंचित किया जाने लगा। जिससे वे पूर्णतः मनुश्यों पर अग्रित हो गयी। वही मनु ने कहा नारी का बचपन पिता पर आश्रित, वही यौवनवास्था में पति पर आश्रित तथा पति के देहांत के पश्चात पुत्रों के संरक्षण में रहना चाहिए। नारी के जन्म से लेकर मरण तक वह किसी न किसी पुरूश पर आश्रित रहती थीं।

उत्तर वैदिक काल इस काल में नारियों को स्थिति में परिवर्तन देखने को मिला था पुत्र जन्म की कामना होने लगी थी वही पुत्री के जन्म को बुरा माना जाने लगा। नारियों के धार्मिक अधिकारों को संकुचित कर दिया। इस काल में नारियों को यज्ञादि कार्य, बाल विवाहों का प्रचलन तथा विधवा पुर्नविवाह पर रोक लगाना आरम्भ कर दिया था। याज्ञवलक्य और मनु जैसे स्मृतिकारों के द्वारा नारियों पर प्रतिबंधात्मक निर्दे"ा दिए जाने भाुरू हो गये और कहा कि नारियों को पतिव्रत का पालन करना चाहिए पति को परमेश्वर तुल्य मानना चाहिए। इस युग में वैदिक काल का प्रभाव था, इसी कारण से उनकी स्थिति अधिक प्रभावित नहीं हुई। इससे केवल निम्न वर्ग, अf"ाक्षित तथा अल्प f"ाक्षित नारियाँ ही प्रभावित हुई थीं। अभिजात वर्ग की कुलीन नारियाँ अपनी f"ाक्षा तथा सम्पन्नता के बल पर मनुश्यों के साथ समानता का अधिकार पाती थी।

मध्य काल का समय 11वीं भाताब्दी से 18वीं भाताब्दी तक का माना जाता है। इस काल को नारियों के दृश्टिकोण से काला युग कहा जा सकता है। इस काल में विदेशियों के आगमन से नारियों की स्थिति में जबर्दस्त परिवर्तन देखने को मिला। वे अf"ाक्षा व रूढ़ियों में जकड़ती चली गई। घरों में कैद होकर रह गई और एक नारी रमणी, अबला और भोग्या बनकर रह गई। ''हिन्दू कन्याओं को सम्पन्न मुसलमान अधिकाधिक संख्या में क्रय करके अपने घरों में रख लिया करते थे। कुलीन नारियों का अपहरण कराके अमीर लोग अपना मनोरंजन किया करते थे।''[3] इस युग ने नारी मात्र भोग्य की वस्तु बनकर रह गई। वह क्रय और विक्रय की वस्तु बनकर रह गई थीं।

जो नारी कभी स्वतंत्र हुआ करती थी और अपने विवाह के लिए वर का चयन स्वयं करती थी। वह मनुश्य द्वारा बनाये गये बंधनों में बंधतो चली गई। नारी को f"ाक्षा प्राप्त करने का मार्ग ही समाप्त कर दिया। राजपूताना युग में नारी के कामिनी या विलासिनी रूप की झांकी देखने को

मिलती है। नारी का जीवन पुरूश की कुत्सित वासनाओं के कीचड़ में फंस गया और जीवन के उदात्त अवसरों से वंचित रह गयी थी।

इस युग में नारियों से कहा गया कि नारी को कभो भी अकेली नहीं रहना चाहिए। उसे हमे”ाा किसी न किसी के अधीन ही रहना चाहिए। बाल्यअवस्था में अपने पिता के समीप, युवावस्था में अपने पति के अधीन और वृद्धावस्था में अपने पुत्र के संरक्षण में रहने का विधान भी इस युग में दिया गया था। इस युग में बाल विवाह का प्रचलन हो गया और नारी के f”क्षा के द्वार लगभग बंद कर दिये गये थे। साथ ही साथ सती प्रथा भी अपने शिखर पर पहुँच चुकी थी। इस काल में नारियों को घरों के कामकाज तक ही सीमित कर दिया था। इस काल में पति परमेश्वर, पतिव्रत धर्म तथा पति के आदे”ाों पर चलने को वि”ा किया गया। वस्तुतः मध्यकाल में नारियों की सभी प्रकार की स्वतंत्रता छीन ली गई। और उन्हें जन्म से मृत्यु तक पुरूशों पर आश्रित रहना पड़ता था।

नारी के सतीत्व व सम्मान की रक्षा करना पुरूश का नैतिक कर्त्तव्य होता है। नारी के पति के साथ–साथ समाज की भी यह नैतिक जिम्मेदारी होती है। नारी के सतीत्व की रक्षा करते हुए आत्म बलिदान होना भी एक गौरवपूर्ण कार्य होता है। अल्लाउद्दी रत्नसेन से जब पद्मावत की मांग करता है रत्नसेन अपने प्राणों की बाजी लगाकर पद्मावत के सम्मान की रक्षा करता है। गोरा बादल भी नारी सम्मान के खातिर अल्लाउद्दीन से लड़ता है। अतः इस प्रकार से साहित्य में भी नारी के सम्मान की रक्षा करने का नैतिक आद”र्ा मिले है।

मध्यकालीन साहित्य में विभिन्न सामाजिक नारियों की चर्चा मिलती है। यहाँ पर अभिजात वर्ग की नारियों का चित्रण अत्याधिक मिलता है। जैसे पदमावता,नागमती, मैना, सीता, कौ”ाल्या, सुमित्रा, कैकयी, सुनयना। ये सभी नारियाँ राजपरिवारों से संबंधित थीं। इनकी सेवा के लिए दासियाँ रहा करती थीं। फिर भी इन सभी नारियों को घरों तक ही सीमित रखा गया। इन्हें अकेले कहीं घूमे फिरने की स्वतंत्रता न थी। यह पुरूशों पर ही आश्रित थीं।

मध्यकाल में नारी के अधिकारों का उल्लेख कहीं पर भी नहीं मिलता है। ‘‘रत्नसेन के द्वारा नागमती, भांकर के द्वारा सती, राम के द्वारा सीता के त्याग के अवसर पर ये स्त्रियाँ अपने आपकों वि”ा एवं असहाय अनुभव करती है।’’[4] इस तरह नारी को किसी प्रकार का सामाजिक अधिकार प्राप्त नहीं था। मध्यकाल में नारी के स्वभाव में अपनी नियति से समझौते का भाव प्रकट होता है। लेकिन चरित्र की कीमत पर वह कभी भी समझौता नहीं करती है। बाल्मीकि की सीता जब परिस्थितियों को अपने अनुकूल नहीं पाती है, तो वह कभी–कभी विरोध करती दिखाई दी है।

यहीं दूसरी तरफ तुलसी की सीता हर परिस्थिति में कश्टों का सामना करती हुई दिखाई दी है। रावण के क्रूर व्यवहार के सामने भी मन्दोदरी मौन नजर आती है। सुग्गा प्रसंग में नागमती रत्नसैन की क्रूर फटकार सुनकर वि”ाता का अनुभव करती है।

मध्यकाल में नारियों को अपना सम्पूर्ण जीवन घर की चार दीवारी में ही व्यतीत करना होता था। घरों के बाहर जाकर f”ाक्षा अर्जन करने का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता है। लेकिन थोड़ा बहुत f”ाक्षा का अवसर नारियों को मिला होगा। अतः इस युग में नारियों को थोड़ा बहुत ता f”ाक्षा प्राप्त हुआ होगा। मध्यकाल में नारियों की स्थिति अधिक अच्छी नहीं थीं। इस काल में नारी पर भाोशण व अत्याचार किये जाते थे नारी की स्थिति दयनीय है।

जीवन और साहित्य में बना दी गयी नारी से विमुक्ति का प्रयास नारी की विमुक्ति की तरफ ले जाता है यहाँ विमुक्ति की तरफ ले जाता है यहाँ विमुक्ति का अर्थ किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं बधिक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक हर क्षेत्र में नारी का स्वयं के लिए सोचने विचारने और निर्णय लेने से है। यही विचार नारी समुदाय की समस्याओं और विशमताओं

की स्थितियों का है। ''भारतीय परिवार की संरचना इस पितृसत्ता की सामन्ती मानसिकता पर आधारित है।''[5]

नारी चिन्तन् एक गम्भीर विशय है जो हमे''ाा से ही विचार और विम''र्ा का मुद्दा बना रहता है। नारी की विभिन्न भूमिकाओं का परिचय मानव समाज को देने तथा सदियों से जिस दुःख दद को नारियाँ सहन कर रही है और जिस अंधकारमय जीवन को जी रही है। उसे प्रका''ा में लाना और नारी समुदाय को विकास के पथ पर ले जाने को संघर्शरत है। वे जो दूर किसी समाज के कोने में सुबक रही है। मानवीय गरिमा के नाम पर यदि उनके पास कुछ है तो उनका शरीर ह। अपने लेखन के द्वारा नारियाँ उसे वाणी प्रदान करके साहित्यिक विकास में सहभागी हो सकती है। अपने लेखन के माध्यम से अधिकारों की मांग कर सकती है। समाज में जो अच्छा–बुरा हो रहा है, उसके प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है।

आधुनिक काल में नारी ने इस सड़ी गली रूढियों को ध्वस्त करती हुई और अपनी स्वतन्त्रता अस्मिता की तला''ा आरम्भ करती हुई दिखाई दे रही थीं। सदियों से इस तला''ा में चली आ रही और रूढ़िवादी मान्यताओं से संघर्शरत है। आधुनिक काल को ही नव जागरण कहा जाता है। उन्नीसवीं सदी से इक्कीसवीं सदी तक आते–आते पुनः नारियों की स्थिति में सुधार हुआ और नारियों ने भौक्षिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, प्र''ाासनिक आदि विविध क्षेत्रों में अपनी नयी पहचान बनाई है। आज की नारियाँ अपनी अलग पहचान बनाती हुई दिखाई दे रही है। ''पुरूश के द्वारा नारी चित्रण अधिक आद''र्ा बन सकता है। परन्तु अधिक सत्य नहीं, विकृति से अधिक निकट पहुँच सकता है किन्तु यर्थाथ के अधिक समीप नहीं। पुरूश के लिए नारी नारीत्व अनुमान है नारी के लिए अनुभव, अतः अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकेगी, वैसा पुरूश बहुत साधना के उपरांत भी भाायद ही दे सकें।''[6] यदि समाज में नारी के प्रति जागृति लाना है, तो समाज की सड़ी गली मान्यताओं को जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। जो नारी के आगे बढ़ने में बाधक है।

19वीं सदी बहुत से समाज सुधारक आये जैसे राजाराम मोहन राय स्वामी दयानन्द सरस्वती, ज्योतिबा फूले आदि। राजा राम मोहन राय ने नारी ि''ाक्षा पर जोर दिया, विधवा विवाह कराने का प्रयास किया, बाल विवाह को समाप्त किया और भ्रूण हत्या तथा सती प्रथा जैसी प्रथाओं को समाप्त किया। ''समाज सुधारक उनके सहयोग से सती प्रथा कन्या वध और अनेक कुप्रथाओं के विरूध कानून बनवाने में सफल हुए।''[7] राजा राम मोहन राय ने नारी जाति के सुधार को लेकर गम्भीरता से चिन्तन किया। सदियों से उपेक्षित व भाोशित नारी को जिन्दा जलाने में कोई हिचक नहीं होती थीं। राजा राम मोहन राय ने देखा कि समाज में प्रचलित अनेक कुरीतियाँ जैसे कन्या वध, विधवा विवाह, और सती प्रथा। इन सभी कुरीतियों का आधार नारियों के प्रति अमानवीय व्यवहार था। दहेज प्रथा के कारण माता–पिता अपनी कन्या के जन्म लेते ही उसका गला घोट देते थे। समाज में नारियों की वि''ोशतया विधवा नारियों का बहुत अनादर किया जाता था।

कुछ समय प''चात ही महाराश्ट्र में 1867ई. में 'प्रार्थना समाज' की स्थापना हुई, इसमें प्रसिद्ध महिला पंडित रमाबाई हुई तब उन्होंने आर्य महिला समाज का निर्माण किया उन्होंने नारियों की स्थिति में सुधार के लिए नारी ि''ाक्षा, विधवा पुर्नर्विवाह का समर्थन किया। ज्योतिबा फुले दम्पत्ति ने नारी चेतना और मुक्ति की दि''ाा में महत्वपूर्ण कार्य किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारियों की ि''ाक्षा पर बल दिया था। उन्होंने सभी के लिए ि''ाक्षा के द्वारा खोल दिये थे।

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के प्रारम्भ में एक ओर तो भारतीय समाज में दे''ा की स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी जा रही थीं तो दूसरी ओर भारतीय स्त्री सांस्कृतिक अस्मिता के संघर्श में अपनी पहचान बनाने या यू कहे कि पहचान बनाने में संघर्शरत थीं।''[8] नारी के जन्म से लेकर मरण तक अनेक प्रकार के नियम कानून बनाए जाते ह। उन्नीसवीं सती के अंत तक तथा बीसवीं सदी के

प्रारम्भ में कुछ नारियों ने घर से बाहर निकलकर न सिर्फ अध्ययन कार्य किया बल्कि विदे”ाों की यात्रा की और विदे”ाों में भी अध्ययन किया।

समाज में परम्पराओं के निर्वाह का दायित्व मुख्यतः नारी के सिर पर ही होता है। यदि परम्पराओं के निर्वाह की उम्मीद की जाती है, तो वह है नारी। परिवार में नारी अनेक भूमिकाएँ अदा करती है। माता, पत्नी, बेटी ये तीन भूमिकाऐं सर्वाधिक महत्त्व रखती है।

आधुनिक काल में नारी की स्थिति में परिवर्तन आया है। ''आज के इस बदलते परिवेश में चाहे किसी क्षेत्र में हो व अपनी अलग पहचान बना चुकी है, जिससे वह अपनी जिन्दगी के सही फैसले ले सके और समाज में उन्हें अपने ढ़ंग से प्रस्तुत कर सकें। साधारण भाब्दों में अगर हम बोले तो उन्हें साक्षर बनाना ही महिला स”ाक्तिकरण है और साथ ही साथ उनकी द”ाा में सुधार करना है, जिससे वह आसमान छू सके और बुलंदियों को पा सके और विश्व में दे”ा का नाम रो”ान कर सकें।''[8] भारतीय नारी की स्थिति सदा एक जैसी नहीं रही है। इसमें समय–समय पर बदलाव आते रहे है। वैदिक युग से लेकर आधुनिक युग तक उनकी द”ाा में अनेक उतार–चढ़ाव और परिवर्तन आते रहे हैं।

21वीं सदी के आते–आते नारियों की स्थिति में अनेक सुधार हुए हैं। वे पत्रकारिता, सेना तथा पायलट जैसे क्षेत्रों में प्रसिद्धि हासिल की है। नारियों ने आज दे”ा में सर्वोच्च स्थान पा लिया है। फिर भी नारी f”ाक्षित समाज का आधार है। नारी f”ाक्षा का फायदा परिवार, समाज तथा राश्ट्र सभी को होता है। फिर भी नारी सामाजिक अन्याय का f”ाकार हुई है। ''जब जब स्त्री उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है, तब तब जाने कितनी रीति–रिवाजों और परम्पराओं, पौराणिक परम्पराओं की दुहाई देकर उसे गुमनाम जीवन जीने पर विव”ा कर दिया जाता है।''[10]

स्वतंत्र भारत में नारियों ने आज करवट बदली है। वह जंजीरों की कड़ियों को तोड़ रही है। वह आज पुरूश के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। आज वह f”ाक्षित नारी के रूप में बाह्य जगत में प्रवे”ा कर रही है। नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरूश के साथ खड़ी है।

नारी तुम केवल श्रृद्धा हो

विश्वास रजत जग पल तल में

पीयूश स्त्रोत सी

वहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।

आज नारी उपयोग और उपभोग्य की वस्तु नहीं है। नारी पुरूश की तरह प्रत्येक कार्य करने में निपुण होती है। लेकिन पुरूश उन्हें असक्ष्म समझकर उन पर हावी रहता है। आज नारी अपने अधिकारों की माँग करती है। उसे वे सभी अधिकार दिये जाए जो एक पुरूश के पास होते है। हमारे समाज में आज भी नारियों पर बंदिशे ज्यों की त्यों बनी हुई है। पुरूश चार से प्रेम करे या तीन चार सदियों करें वह फिर भी स्वतंत्र है, उसे समाज द्वारा बहिश्कृत नहीं किया जाता और उसे कुलटा व करमजली नहीं कहा जाता यदि नारी अपना जीवन अपने अनुसार बिताना चाहे तो वहीं सारे नियम बदल जाते हैं, उसे तरह–तरह के नामों से पुकारा जाता है, नारी सपने में भी नहीं सोच सकती कि जिस पुरूश पर वह अपना सब कुछ न्यौछावर कर देती हैं वहीं पुरूश उसके साथ अत्याचार करें, और नारी की विव”ाता का लाभ उठाने से भी न चूकता है। जिनसे वे आस लगाती है अपनी सुरक्षा का वही इज्जत का तार–तार करते है। नारी जिसको अपना मुकदर मानकर जुल्मों को बर्दा”त करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि अगले जनम मोहे बिटिया न कीजो।

कवयित्री महादेवी वर्मा ने कहा कि नारी केवल मांस–पीड की संज्ञा नहीं है। आदिकाल से अब तक विकास पथ पर पुरूश का देकर उसकी यात्रा को आसान करने का कार्य नारी ने किया है। पुरूश और नारी एक दूसरे के पूरक है, लेकिन वे दोनों ऐसे छोर है जिसने सृश्टि के क्रम को बनाया हुआ है। नारी कोमल वाणी से जीवन को अमृतमय कर देती है। ''महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियों से नारी का 'गोदान' है इसमें एक स्त्री ने खुलकर अपनी पीड़ाओं, आकांक्षाओं और आ"ााओं को व्यस्त किया है।''[11] महादेवी वर्मा जब–''मैं नीर भरी दुख की बदली उमड़ी थीं मिट आज चली'' कहती है तो वास्तव में नारी के आंसु से भरे जीवन की दुःख गाथा है। युगों–युगों से नारी की सम्पूर्ण, पीड़ा मूतिमान हो जाती है।

आधुनिक भारत की नारियाँ अन्याय नहीं सहन करती है। वे विशम परिस्थितियों का डटकर कर मुकाबला करती है। वे आत्मविश्वास के साथ समाज में अहम भूमिका अदा कर रही है। समाज का विकास तभी संभव होगा जब नारी को उचित सम्मान मिलेगा। महिला दिवस 8 मार्च को मनाया जाता है, इस दिन महिलाओं की वर्तमान द"ाा को देखते हुए उनके कार्यों की सराहना की गई थीं। इस दिन उन्हें पुरूस्कृत भी किया गया था। अब परिवार की हर बातों में नारियों की भी बात सुन जायेगी। नारियाँ आर्थिक व व्यक्तिगत रूप से मजबूत तथ स्वतंत्र हो गई है। यह एक सकारात्मक परिवर्तन है नारी की प्रगति सिर्फ नारी की भलाई की दृश्टि से महत्वपूर्ण नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज की दृश्टि से बेहद आवश्यक है।

आधुनिक काल के परिप्रेक्ष्य में नारी पुरातन मूल्यों को त्यागकर नवीन मूल्यों को अपनाती दिखाई दे रही है। 'वर्तमान में नारी को कानूनी अधिकार तो प्राप्त हुए किंतु समाज में उसे मानव का स्थान नहीं मिला है। कालानुसार नई–नई, समस्याऐं आज की नारी के सामने है। बलात्कार, स्त्री भ्रूणहत्या, दहेज, मानसिक तथा भाारीरिक भाोशण काफी मात्रा में हो रहा है। आज भी यह समाज का चिंता का विशय बन गया हैं।''[12] बै"ाक 21वीं सदी मं नारी को स्वतंत्रता मिल गई है लेकिन पूर्णतः आज भी वह स्वतंत्र नहीं है। वर्तमान समय में भी नारी पर कुछ बंधन देखने को मिलते है। पितृसत्तात्मक समाज ने नारी को बंधनों से पूर्णतः मुक्त नहीं किया है भारतीय समाज पितृसत्तात्मक समाज है।

f"ाक्षा के क्षेत्र में आज की नारियाँ पुरूशों से कई कदम आगे निकल चुकी है। वह कथा विशयों के साथ–साथ विज्ञान और वाणिज्य आदि विशयों में सफलता पूर्वक f"ाक्षा ग्रहण कर रही है। नारी प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के पथ पर प्रगति कर रही है। आधुनिक नारी ने साबित कर दिया है कि कोई भी काम कर सकती है जैसे एक्जीक्यूटिव ऑफिसर का हो या विमान चालक का नारी उसे सम्पन्न कर सकती है। वे सिर्फ ममतामयी जननी तथा घरों के कामकाज देखने वाली नहीं बल्कि सभी कार्यों को बखूबी से कर सकती है।

निष्कर्षः– यह सब देखते हुए हम इस निश्कर्श पर पहुँचे है कि वैदिक काल से आधुनिक काल तक आते आते नारियों की स्थिति में काफी उत्तार–चढ़ाव आया है। वैदिक काल में नारी की स्थिति सम्मानजनक थीं, तो वही मध्यकाल में विदे"ायों के आगमन से नारी की स्थिति में काफी गिरावट देखने को मिली। मध्यकाल की नारी को सम्मान नहीं मिला वह चार दीवारी में कैद होकर रह गई। इस काल में नारी का खूब शोशण किया गया। आधुनिक काल में नारी ने धीरे–धीरे अपनी अहम भूमिका निभाई। आधुनिक काल में भाोशण के खिलाफ आवाज उठाई। दे"ा की आजादी के समय नारी को भी आजादी मिल गयी वह स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को व्यक्त करने लगी। धीरे–धीरे नारिया पुरूशों के मालिकाना हका को चुनौती देने लगी। नारियों ने समाज में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ बोलना आरम्भ कर दिया। वर्तमान में नारियों ने अपने अधिकारों के खिलाफ आवाज उठाई। आज की नारी f"ाक्षित नारी है, वह कहीं भी दे"ा या विदेश अध्ययन करने जा सकती है।

संदर्भ

1. सिंहल, डॉ0 लता भारतीय संस्कृति में नारी, पृ. 1
2. वहीं पृ. 12
3. डॉ नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 89.
4. मीणा, डॉ ललिता पूर्व मध्यकालीन काव्य में चित्रित स्त्री–जीवन पृ.–4.
5. कुमारी, कमले”ा स्त्री विम”र्ा और नेपथ्य राग पृ.–11
6. वर्मा, महादेवी श्रृंखला की कड़िया पृ. 66.
7. परा”ार, सुनन्दा हिन्दी नव जागरण और स्त्री अस्मिता पृ.–17.
8. वहीं पृ. 48।
9. https://anubooks.com
10. वही
11. कुमारी, कमले”ा स्त्री विम”र्ा और नेपथ्य राग पृ. 50.
12. https://www.researchjourney.net